

डॉ. टिम गोम्बिस, गलातियों , सत्र 2, गलातियों 1:1-10, इस पत्र का परिचय

© टिम गोम्बिस और टेड हिल्डेब्रांट

गलातियों पर इस दूसरे व्याख्यान में आपका स्वागत है। यह गलातियों 1.1-10, इस पत्र का परिचय, को कवर करता है।

यदि आपने पॉल के पत्रों के परिचय पढ़े हैं, तो आप देखेंगे कि यह पत्र बहुत अलग है, जो इस बात का संकेत देता है कि यह पत्र पॉल द्वारा लिखे गए अन्य पत्रों से बहुत अलग होने वाला है।

आप जानते हैं, पत्र परिचय अक्सर पत्र के तर्क, पत्र के लहजे और पत्र की भावना के बारे में बहुत सारे सुराग देते हैं, और यह वास्तव में अलग नहीं है। वास्तव में, रोमियों के परिचय के बगल में गलातियों के परिचय को पढ़ना बहुत शिक्षाप्रद है। ये पत्र अक्सर एक-दूसरे के बगल में रखे जाते हैं क्योंकि उनके पास कई समान विषय होते हैं।

अब्राहम प्रकट होता है, विश्वास द्वारा औचित्य एक बड़ी बात है, और धार्मिकता और मूसा के कानून, यहूदी-गैरयहूदी संबंधों आदि के बारे में बहुत सारी बातें हैं। रोमियों के परिचय को पढ़ें, आयत 1-15, और आप गलातियों के परिचय, विशेष रूप से आयत 1-10 से एक नाटकीय अंतर देखेंगे, लेकिन यह भी रहस्यमय है, गलातियों की शुरुआत। मुझे कहना चाहिए कि यह बहुत ही संक्षिप्त है, जबकि, रोमियों में, पॉल बहुत ही शब्दाडंबरपूर्ण और विस्तृत है कि वह उन्हें देखने के लिए कितना तरसता है और वह उनके बारे में कैसे सोचता है और इस तरह की सभी चीजें।

गलातियों का पत्र बहुत अलग है, बहुत विशिष्ट है। वह निश्चित रूप से अपने प्रेरित होने पर जोर देता है, लेकिन केवल यह उल्लेख नहीं करता कि वह एक प्रेरित है। वह इस बारे में बात करता है कि इसका मानवीय मूल नहीं बल्कि दिव्य मूल है, जो कि उसके अन्य पत्रों में कही गई किसी भी बात से बहुत अलग है।

आपको पहले से ही यह समझ में आ रहा है कि शायद, और कई लोगों ने यह बात कही है, पॉल थोड़ा रक्षात्मक हो रहा है, या हमें यह कहना चाहिए, उसे उस पहलू पर जोर क्यों देना है? यह इसका एक हिस्सा हो सकता है, रक्षात्मक होना, लेकिन इसके लिए कुछ अन्य कारण भी हो सकते हैं। आप देखेंगे कि यह किसी चर्च को नहीं बल्कि चर्चों को लिखा गया पत्र है। जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया है, संभवतः चर्चों का एक नेटवर्क था जिसे वह लिख रहा था।

शायद ये गृह कलीसियाएँ हैं जो एक दूसरे से बहुत करीब से जुड़ी हुई हैं, जो कि बिलकुल भी असामान्य नहीं होगा। हमारे लिए और भी खास और निश्चित रूप से बहुत ही चौंकाने वाली बात यह है कि कलीसियाओं के लिए कोई धन्यवाद नहीं है, और कोई प्रशंसा नहीं है। जब आप एक पत्र पढ़ते हैं जो लगभग उसी समय से आता है जब गलातियों को लिखा गया था, 1 थिस्सलुनीकियों, तो बहुत सारी प्रशंसा है।

पॉल इन लोगों से प्यार करता है और उनसे प्रभावित है; उनकी प्रतिष्ठा फैल रही है। गलातियों, ऐसा कुछ भी नहीं। पॉल किसी भी सेवकाई सहयोगी का नाम नहीं लेता है, भले ही वह लोगों के साथ निःसंदेह है, खासकर, जैसा कि मैंने सुझाव दिया है कि अगर वह यरूशलेम जा रहा है, या शायद जाने वाला है, या इस पत्र को लिखते समय पहले से ही यरूशलेम में आ चुका है।

उन्होंने बताया कि उन्हें बचाया गया है, या शायद वर्तमान बुरे युग से छीन लिया गया है, और यह कुछ ऐसा है जिस पर हम इस व्याख्यान में थोड़ा समय बिताने जा रहे हैं। इसके अलावा, वहाँ आने की कोई योजना नहीं है। अच्छे संबंधों का कोई ज़िक्र नहीं है।

मैंने पिछले व्याख्यान में उल्लेख किया था कि अध्याय 4 में, वह बहुत ही रोचक अवसर के बारे में बात करता है जिसके कारण चर्चों की स्थापना हुई, लेकिन वह इन लोगों को फिर से देखने के लिए उत्सुक नहीं है, जरूरी नहीं। बस इतना कहना है कि यह एक विशिष्ट पत्र की शुरुआत है, जो इस पत्र को बहुत ही विशिष्ट बनाती है जब वह इसे अन्य पत्रों के मुकाबले में रखता है। मैं इस व्याख्यान के दौरान सुझाव देने जा रहा हूँ कि समझने की एक कुंजी, वास्तव में, शायद गलातियों की बयानबाजी को समझने की कुंजी और वास्तव में तर्क की समग्र अवधारणा को समझना, गलातियों के सर्वनाशकारी चरित्र को समझना और विरोधों के सेट, विरोधाभासों को समझना है, ये विरोध जो पॉल पूरे पत्र में दोहराता है।

ये पॉल के सर्वनाशकारी ढांचे से आते हैं, जो कि श्लोक 4 में ही शुरू हो जाता है, जब पॉल यह कथन करते हैं, यीशु मसीह का जिक्र करते हुए, जिन्होंने हमारे पापों के लिए खुद को दे दिया, ताकि वह हमें बचा सकें या हमें इस वर्तमान बुरे युग से मुक्ति दिला सकें। गलातियों में क्या चल रहा है और पॉल के धर्मशास्त्र को सही ढंग से समझने के लिए, हमें पॉल के सर्वनाशकारी ढांचे, या इस ब्रह्मांडीय ढांचे को समझना होगा, जिसमें पॉल सब कुछ देखता है। अब, ये शायद ऐसे शब्द नहीं हैं जिनका आप अक्सर इस्तेमाल करते हैं, ब्रह्मांडीय ढांचे या सर्वनाशकारी ढांचे, लेकिन मेरा मतलब यह है।

हम पुराने नियम या यहूदी अपेक्षाओं को इस तरह से चार्ट कर सकते हैं। कहने का मतलब है, परमेश्वर के लोगों और शास्त्र ने इस बारे में बात की; परमेश्वर के लोग समझते हैं कि वे वर्तमान बुरे युग में रह रहे हैं। वे पाप के शासन की अवधि में रह रहे हैं।

शैतान उनका परम आध्यात्मिक शत्रु है। वे अंधकार की शक्तियों और शरीर के विरोध का अनुभव करते हैं, और लोग मर जाते हैं, जो कि परमेश्वर की योजना में बिल्कुल भी नहीं है। और, इस युग के दौरान, भविष्यवक्ता इसके बारे में बात करते हैं, और नियम के बीच यहूदी काल के यहूदी सभी भविष्यवक्ताओं द्वारा कही गई बातों का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं।

वे प्रभु के दिन का इंतज़ार कर रहे हैं। वे उस चरम दिन का इंतज़ार कर रहे हैं जब परमेश्वर वापस आएगा, जहाँ वह अपने लोगों को बचाएगा, दुष्टों का न्याय करेगा, बुराई को मिटाएगा, अपने ब्रह्मांडीय दुश्मन शैतान को हराएगा, और वह वर्तमान बुरे युग को खत्म कर देगा, और आने वाले युग की पूर्णता लाएगा। यशायाह, यिर्मयाह और यहजेकेल एक नई सृष्टि की बात करते हैं, परमेश्वर द्वारा अपनी आत्मा भेजने की, परमेश्वर के राज्य के आने की, परमेश्वर के शासन के आने

की, ताकि परमेश्वर के धर्मी लोग शालोम के इस काल में प्रवेश करें, जहाँ वे सृष्टि का अनुभव उस तरह से कर रहे हैं जैसा परमेश्वर ने चाहा था।

धार्मिकता, पूर्णता और उंडेलने का शासन, जैसा कि मैंने पिछले व्याख्यान में कहा था, विशेष रूप से फरीसियों के लिए, पुनरुत्थान के जीवन का उंडेलना ताकि परमेश्वर के अपने लोग देश में परमेश्वर के अपने जीवन का अनुभव उसी तरह से कर सकें जैसा परमेश्वर ने उनसे चाहा था। तो, बस इतना ही कहना है कि यह पुराने नियम से आने वाली भविष्य-उन्मुख अपेक्षा है जिसने पॉल की मानसिकता और पॉल के युग के यहूदियों को आकार दिया होगा। अब, यह एक और चार्ट है।

मैं इसे ध्यान से इंगित करूँगा। एक अर्थ में, पिछली स्लाइड से एक दिन को दो भागों में विभाजित किया जाता है, और प्रेरितों के प्रचार में कुछ असामान्य प्रकार की घटना घटित होती है। प्रेरितों ने चीजों को इस तरह से प्रस्तुत किया, और इसका इस बात पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा कि पॉल के धर्मशास्त्र को किस तरह से देखा जाना चाहिए।

एक अर्थ में, क्रूस के क्षण में, जिसे अक्सर मसीह घटना कहा जाता है, या यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान, और उसका पुनरुत्थान और राज्य करने के लिए उसका स्वर्गारोहण, एक अर्थ में यह दिन, न्याय का दिन और उद्धार का दिन, प्रभु का दिन है। तो, उद्धार पहले ही आ चुका है। वर्तमान युग का न्याय किया जा चुका है।

और इसलिए हम कह सकते हैं कि एक तरह से नई रचना आती है। नई रचना बाहर आती है। लेकिन कुछ ऐसा भी है जो बहुत ही असामान्य है।

यह वर्तमान दुष्ट युग पूरी तरह से नष्ट नहीं हुआ है। यह पूरी तरह से समाप्त नहीं हुआ है। एक अर्थ में प्रेरित अभी भी भविष्य के दिन, मसीह के दिन की प्रतीक्षा कर रहे हैं, जब परमेश्वर के उद्धार की पूर्णता पूर्ण हो जाएगी या पूरी हो जाएगी या पूरी तरह से काम करेगी।

इसलिए, नए नियम के धर्मशास्त्र और पॉलिन धर्मशास्त्र में, हम पहले से ही के बारे में बात करते हैं, लेकिन अभी तक नहीं। यानी, वर्तमान बुरे युग का न्याय किया गया है और उसे नष्ट कर दिया गया है, लेकिन यह अभी तक पूरी तरह से नष्ट नहीं हुआ है। मसीह और आत्मा द्वारा नया युग शुरू हो गया है, लेकिन यह अभी तक पूरी तरह से यहाँ नहीं आया है।

और हम अभी भी उस भविष्य के दिन का इंतजार कर रहे हैं जब वह पूरी तरह से आ जाएगा। कहने का तात्पर्य यह है कि चर्च समय के बीच के इस समय में रहता है। हम मसीह के दिन और मसीह के दिन के बीच, प्रभु के दिन और प्रभु के दिन के बीच, उद्धार के दिन और उद्धार के दिन के बीच के इस समय में रहते हैं।

यह एक तरह का अप्रत्याशित, अप्रत्याशित, समय के बीच का समय है जहाँ हम युगों के ओवरलैप का अनुभव करते हैं। वर्तमान बुरे युग का न्याय किया जाता है और उसे नष्ट कर दिया जाता है, और हम इससे मुक्त हो जाते हैं, लेकिन हम अभी भी इससे पूरी तरह से बाहर नहीं निकले हैं। हम अभी भी यहाँ हैं ताकि हम इन दोनों के धक्के और खिंचाव को महसूस कर सकें; हम इन दोनों युगों के प्रभावों को एक साथ महसूस करते हैं।

हम युगों के क्रॉसओवर में रहते हैं। इस वास्तविकता को हम इस तरह से दर्शा सकते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि हम वर्तमान बुरे युग में पूरी तरह से लिपटे हुए थे, लेकिन परमेश्वर हमें इस नए युग में ले आया है, और मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान में, परमेश्वर ने वास्तव में पुरानी दुनिया को मार डाला है और इस नए युग का निर्माण किया है जहाँ हमें मूल रूप से अपनी पहचान पूरी तरह से पा लेनी है।

पॉल यही चाहता है कि गलातियों को इस नए युग में अपनी पहचान ढूँढनी चाहिए, क्योंकि वह देखता है कि गलातिया में उन्हें जो शिक्षा दी जा रही है, वह मूल रूप से एक ऐसी शिक्षा है, जो कि, हाँ, पवित्रशास्त्र में भरी हुई है, और यह बाइबल से आती है, लेकिन यह उन श्रेणियों द्वारा उन्मुख हो रही है जो इस पतित युग से आती हैं। लेकिन वह यहाँ बिलकुल शुरुआत में जो कहता है वह यह है कि आपको वर्तमान बुरे युग से छुड़ाया गया है, और निहितार्थ से, आपको आत्मा द्वारा इस नए युग में लाया गया है। हालाँकि, चर्च समय के बीच के इस समय में रहता है, यह ब्रह्मांडीय स्थान जो अभी भी देखरेख में है और वर्तमान बुरे युग के प्रभाव को महसूस करता है, और हम इस ब्रह्मांडीय स्थान में रहते हैं जो आत्मा के प्रभाव के अधीन भी है।

इसलिए, जब पॉल शरीर और आत्मा के बीच युद्ध के बारे में बात करता है, तो फिर से, वह जरूरी नहीं कि इन दो गतिशीलताओं के बारे में बात कर रहा हो जो प्रत्येक व्यक्ति के लिए आंतरिक हैं। मैं एक व्यक्ति के रूप में इन प्रभावों को महसूस करता हूँ, लेकिन पॉल इन बड़ी गतिशीलताओं के बारे में बात कर रहा है। शरीर का क्षेत्र समुदायों पर काम कर रहा है।

आत्मा का क्षेत्र समुदायों पर काम कर रहा है। और समुदाय और संबंधपरक गतिशीलता और सामाजिक क्षेत्रों और सांस्कृतिक मूल्यों में पहचान का निर्माण, यह सब। समुदाय अंतरिक्ष में एक साथ जीवन का अनुभव करते हैं।

और पॉल के लिए, यह अंतरिक्ष और स्थानों में है। पॉल के लिए, यह वर्तमान युग ऐसा है जिसमें ये स्थान वर्तमान बुरे युग और मृत्यु की शक्तियों और शरीर की शक्ति के प्रभाव के अधीन हैं, जो रिश्तों को प्रभावित करता है। चर्च और यीशु के अनुयायियों की छोटी सामाजिक इकाइयाँ भी ऐसी जगहें हैं जहाँ परमेश्वर अपनी आत्मा के द्वारा निवास करता है।

इसलिए, हम अपने संबंधों में और यहाँ तक कि अपने शरीर में भी आत्मा और शरीर के प्रभावों को महसूस करते हैं। लेकिन यह वह बड़ी गतिशीलता है जो पॉल के सर्वनाशकारी विरोधाभासों के लिए जिम्मेदार है, जहाँ वह बात कर रहा है... उसके पास इनमें से कई होंगे। पॉल मनुष्यों द्वारा नियुक्त प्रेरित नहीं है।

उसे ईश्वर ने नियुक्त किया है। वह मूल रूप से यह कहने की कोशिश कर रहा है कि भले ही चर्च युगों के इस क्रॉसओवर में रहता है, जिस तरह से आप वर्तमान में सोच रहे हैं और जी रहे हैं और जो निर्णय आप ले रहे हैं वह मूल रूप से उस दुनिया के अनुरूप है जिससे ईश्वर आपको बाहर लाया है। मैं चाहता हूँ कि आप सोचें, विचार करें और निर्णय लें क्योंकि आप अपनी पहचान के संदर्भ में एक समुदाय के रूप में आगे बढ़ते हैं जिसे ईश्वर ने आपको यहाँ लाया है।

तो, यह वर्तमान दुष्ट युग और नया युग, मसीह में और आत्मा द्वारा नया सृजन युग, पॉल द्वारा गलातियों में की गई विरोधी सोच का कारण है। वर्तमान दुष्ट युग के शरीर से सोचने का एक तरीका आता है। मसीह में नए युग से सोचने का एक तरीका आता है, और यही पॉल बता रहा है।

वह मूल रूप से उन्हें यह करने के लिए प्रेरित कर रहा है कि वे अपनी पहचान बनाएं, अपनी पहचान जानें, और मसीह में उस नए युग और उस नई वास्तविकता से अपना सामुदायिक जीवन जिएं। साथ ही, यह मामला है, और यह सिर्फ यह कहने का एक अच्छा समय हो सकता है कि कई बार जब समकालीन ईसाई मोक्ष की कल्पना करते हैं, तो हम मोक्ष को कुछ ऐसा मानते हैं जो मेरे साथ जुड़ा हुआ है और वह कुछ मेरे साथ हुआ है। मैं बच गया।

मैं उद्धार का आनंद लेता हूँ। इसलिए, मैं कल्पना करता हूँ कि शायद मेरा आंतरिक स्थान एक ऐसा स्थान है जो भ्रष्ट और पाप से भरा हुआ था, और यीशु मेरे दिल में चले गए और अंदर की चीजों को शुद्ध कर दिया, और अब मैं बचा हुआ हूँ। मेरे लिए अन्य बचाए गए लोगों के साथ चर्च जाना एक अच्छी बात है, जो एक अच्छा सीखने का अनुभव या सीखने का अवसर है कि मुझे जो उद्धार मिला है उसका प्रबंधन कैसे करना है और उसका आनंद कैसे लेना है।

यह मेरा अधिकार है। यह उन चीजों के बारे में सोचने का एक तरीका है जो एक व्यक्तिवादी और वास्तव में सांसारिक अवधारणा से काफी हद तक सत्य हैं। पॉल के लिए, वह सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से मोक्ष के बारे में सोचता है जो ब्रह्मांड में घटित हुआ।

सृष्टि के ढांचे को मृत्यु की शक्तियों, अंधकार की शक्तियों, शैतान, पाप, शरीर और मृत्यु ने अपने कब्जे में ले लिया था। और जब परमेश्वर ने इस्राएल का निर्माण किया और उस स्थिति में व्यवस्था दी, तो अंधकार की इन सभी शक्तियों और सृष्टि के ढांचे को प्रभावित करने वाली और संक्रमित करने वाली शक्तियों ने सुनिश्चित किया कि वह परियोजना विनाशकारी रूप से समाप्त हो। इसलिए, जब परमेश्वर ने मसीह में अपना कार्य किया, तो वह ऐसा कार्य था जो उसने ब्रह्मांड के ढांचे के लिए किया।

वह यीशु के अनुयायियों के इन समुदायों का निर्माण करके यह साबित कर रहा है जो आत्मा की उपस्थिति का आनंद लेते हैं। इसलिए, जब पॉल उद्धार के बारे में सोचता है, तो वह सबसे पहले ब्रह्मांड के बारे में सोचता है, परमेश्वर के ब्रह्मांडीय शत्रुओं के बारे में जिन्हें उसने पराजित किया है, और यह कैसे नए समुदायों द्वारा वास्तविकता में दर्शाया और महसूस किया जाता है जो नए बनाए गए लोगों से उत्पन्न होते हैं और इन नई संगति में लाए जाते हैं। ब्रह्मांडीय, सामूहिक, व्यक्तिगत।

जबकि पश्चिम में हम, कम से कम जिस तरह से मुझे सोचने के लिए प्रशिक्षित किया गया था, यह पूरी तरह से व्यक्तिगत है। और हमें इस बारे में सोचने की ज़रूरत हो सकती है कि हम सामूहिक रूप से क्या करते हैं। लेकिन ब्रह्मांडीय रूप से, हम बस उन शब्दों में नहीं सोचते हैं।

लेकिन पॉल के लिए, ब्रह्मांड रणनीतिक है। और यही उन विरोधाभासों का कारण है। इसलिए जब पॉल अपने प्रेरितत्व के बारे में बात करता है कि वह मनुष्यों से नहीं, बल्कि यीशु मसीह के माध्यम से है, तो वहाँ कुछ हद तक रक्षात्मकता हो सकती है।

लेकिन वह जो कहना चाह रहा है वह यह है कि उसका प्रेरितिक आदेश और उसका प्रेरितिक आह्वान एक मौलिक रूप से नए क्षेत्र से संबंधित है जिसे वास्तविकता में डाला गया है। यह ऐसा क्षेत्र नहीं है जो नीचे से निर्मित किया गया हो। यह मनुष्यों के क्षेत्र से नहीं है।

वैसे, यह कानून विरोधी बयानबाजी में जाने का एक छोटा सा संकेत हो सकता है जो हमें गलातियों में मिलता है। एक अर्थ में, पॉल के दिनों में, यहूदी धर्म एक ऐसी संस्कृति बन गई थी जो शास्त्रों की तुलना में वर्तमान बुरे युग में चल रहे मुद्दों से बहुत अधिक प्रभावित थी। यह मानवीय रूप से निर्मित पूर्वाग्रहों का क्षेत्र है, चीजों को पूरा करने के लिए मानवीय रूप से निर्मित साधनों का, ताकत का उपयोग करने का, जबरदस्ती का उपयोग करने का।

यह वह क्षेत्र है जहाँ पहचान बहुत ही मानवीय तरीकों से बनाई जाती है, जहाँ मेरी जाति, जातीयता, लिंग और सामाजिक स्थिति के आधार पर मेरा मूल्य होता है। यही मुझे मेरा मूल्य देता है। पॉल के दिनों के यहूदी धर्म में, पॉल इन सभी तरह की सोच के अधीन था, सिर्फ इसलिए क्योंकि वे इंसान हैं।

इसीलिए जब उसे सुसमाचार की मौलिक नवीनता को व्यक्त करने का अवसर मिलता है, तो वह इस बारे में बात करता है कि मसीह में अब कोई यहूदी या यूनानी, दास या स्वतंत्र, पुरुष या स्त्री नहीं है। ये वे चीजें नहीं हैं जो अब हमें हमारा मूल्य देती हैं। जो हमें हमारा मूल्य देता है वह है मसीह में होना।

दरअसल, क्रूस ने इस क्षेत्र को तहस-नहस कर दिया है। इसने इस क्षेत्र को खत्म कर दिया है, और इसने हमें इस क्षेत्र में क्रूस पर चढ़ा दिया है, इसलिए अब हमें, मैं अपनी भाषा बदलने की कोशिश कर रहा हूँ; हमें अब स्वतंत्रता का अनुभव करना है। हमें ऐसा करने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन हमें अपने निवास करने वाले मसीह से अपनी पहचान बनाने की स्वतंत्रता और आश्चर्य और आनंद और मुक्ति का अनुभव मिलता है, जो हमें परम मूल्य देता है, जो कि सुसमाचार का हिस्सा है, और हम जैसे-जैसे आगे बढ़ेंगे, हम उस तक पहुँचेंगे।

लेकिन सिर्फ इतना ही कहना है कि, पॉल की मानसिकता में, वह निश्चित रूप से मानवीय सोच के तरीकों का कैदी बन गया था, जिसके कारण पॉल गैर-यहूदियों को यहूदियों से कम मूल्यवान समझने लगा, शायद महिलाओं को पुरुषों से कम मूल्यवान समझने लगा, फरीसियों को उन सभी पापियों से कहीं ज़्यादा मूल्यवान समझने लगा, जिनसे उन्हें किसी तरह निपटना था या उनसे छुटकारा पाना था या उन्हें ज़्यादा आज्ञाकारी बनने के लिए मजबूर करना था। और पॉल के साथ जो हुआ, उसके कारण एक मौलिक नयापन है, और पॉल चाहता है कि गलातियों को उस नएपन का अनुभव हो। इस सर्वनाशकारी ढांचे से आने वाले विरोधाभासों का वह समूह बहुत अलग है और विरोधाभासों को उन विरोधाभासों की तुलना में प्रस्तुत करने का एक बेहतर तरीका है, जिन्हें हम अक्सर समझने की कोशिश करते हैं, जैसे होने और करने या विश्वास करने और आज्ञा मानने, या धर्म पर रिश्ते के बीच द्विआधारी के बारे में सोचना।

पॉल उन शब्दों में नहीं सोच रहा है। वह पुरानी सृष्टि, वर्तमान बुरे युग और नई सृष्टि के संदर्भ में सोच रहा है। वर्तमान बुरे युग और नई सृष्टि।

वर्तमान दुष्ट युग में ऐसी क्रियाएँ, दृष्टिकोण, मुद्राएँ, संबंधपरक गतिशीलताएँ, मानसिकताएँ और सांस्कृतिक धारणाएँ शामिल हैं जो इस दुनिया के समग्र रूप से हैं और अक्सर विनाशकारी होती हैं। व्यवहार, दृष्टिकोण, मुद्राएँ, संबंधपरक गतिशीलताएँ, होने के तरीके और काम करने के तरीके ये सभी स्वतंत्रता के उत्पादक हैं क्योंकि वे मसीह-उन्मुख मुद्राएँ और संबंध आदि हैं। इसलिए हम उस सर्वनाशकारी ढाँचे पर बार-बार लौटेंगे।

पत्र के इस परिचय में गलातियों 1-10 में जो कुछ घटित हो रहा है, उसकी कुछ अन्य विशेषताएँ। पौलुस ने परमेश्वर पिता का उल्लेख किया है, जिसने यीशु को मृतकों में से जिलाया, जो एक अनूठी विशेषता है। पौलुस द्वारा पत्र के आरंभ में पुनरुत्थान का उल्लेख करना बहुत आम बात नहीं है।

लेकिन पॉल के लिए, यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान एक साथ चलते हैं। यह मसीह की मृत्यु और उसका पुनरुत्थान है जिसने पुनरुत्थान स्थान को जन्म दिया है, जो जीवन की पूर्णता है। और, बेशक, जीवन की उस पूर्णता का आनंद चर्च समुदाय उठाता है।

और पॉल के लिए, मसीह में नया युग आ गया है। पॉल के लिए सुसमाचार की यही मौलिक नवीनता है। और फिर, जब पॉल पुनरुत्थान के बारे में सोचता है, तो वह मेरे मृतकों में से जी उठने के बारे में नहीं सोचता।

इसमें वह भी शामिल है। वह समग्र ब्रह्मांडीय परिवर्तन के बारे में सोचता है। अब, फिर से, यीशु मसीह को मृतकों में से जीवित कर दिया गया है।

हम उसके साथ सह-उठाए गए हैं। लेकिन पूरी सृष्टि और सभी प्राणी अभी पुनरुत्थान की पूर्णता का अनुभव नहीं कर रहे हैं। इसलिए, हम पहले से ही पुनरुत्थान का अनुभव कर रहे हैं, लेकिन अभी तक नहीं।

पॉल इसे एक वर्तमान अनुभव के रूप में बताता है। ध्यान रखें कि पुनरुत्थान और इसके हमारे वर्तमान आनंद को पुनरुत्थान के समग्र चरित्र के संदर्भ में समझने की आवश्यकता है जिसने पॉल की समझ को आकार दिया होगा। क्योंकि पॉल के लिए, पुनरुत्थान जीवन, मृतकों में से जीवन, का अर्थ है नई राजनीति, एक नई अर्थव्यवस्था, एक नया तरीका, एक नया तरीका, एक नया तरीका, संबंध बनाने का एक नया तरीका।

यह पूरी तरह से समग्र है, जो समकालीन चर्चों के लिए ईसाई अस्तित्व के बारे में सोचने के लिए एक नया समग्र तरीका है। इसलिए चर्च समुदाय हैं। मैं इस शब्द का उपयोग करने में संकोच करता हूँ क्योंकि इसे गलत तरीके से समझा जाता है, लेकिन चर्च समुदाय राजनीतिक इकाइयाँ हैं। वे मसीह के शासन के तहत एक साथ इकट्ठे हुए लोगों की इकाइयाँ हैं, जो एक दूसरे से मौलिक रूप से अलग तरीके से संबंध रखते हैं, जो एक दूसरे की सेवा करते हैं क्योंकि वे अब मसीह में हैं, जो बाहरी दुनिया से मौलिक रूप से अलग तरीकों से संबंध रखते हैं, जो एक दूसरे के प्रति राजनीतिक रुख अपनाते हैं और दुनिया के प्रति राजनीतिक रुख अपनाते हैं।

लेकिन यह उदारता, प्रेम, देखभाल, सेवा, उपहार देने और आतिथ्य से प्रेरित राजनीति है, न कि सत्ता हथियाने, नाम पुकारने और अपमानजनक भाषण की राजनीति। दुख की बात है कि दुनिया के कई हिस्सों में चर्च की राजनीति इस दुनिया की राजनीति से भ्रष्ट हो गई है क्योंकि कई ईसाई वातावरण इस युग में पूरी तरह से अंतर्निहित वातावरण बन गए हैं बजाय नए वातावरण के जो मसीह में नए युग में पूरी तरह से अंतर्निहित हैं। लेकिन जब पौलुस मृतकों में से जी उठने के बारे में सोचता है, तो यह समग्र है और चर्च के जीवन के लिए एक समग्र प्रक्षेपवक्र निर्धारित करता है।

पॉल गलातियों 4 में, या क्षमा करें, अध्याय 1 की आयत 4 में, जब वह यीशु मसीह का उल्लेख करता है, तो वह हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से अनुग्रह और शांति के इस आशीर्वाद के बारे में बात करता है। और जब पॉल यीशु मसीह का उल्लेख करता है, तो वह उसका उल्लेख ऐसे व्यक्ति के रूप में करता है जिसने हमारे पापों के लिए खुद को दे दिया। खुद को देना, पॉल के लिए, यीशु की पहचान का मूल है।

पॉल गलातियों 2 में फिर से इसका उल्लेख करने जा रहा है जब वह यीशु मसीह का उल्लेख करता है, जिसने मुझसे प्रेम किया और मेरे लिए खुद को बलिदान कर दिया। तो, यीशु का आत्म-समर्पण ही उसकी पहचान है। फिर से, इसे अपने धर्मशास्त्र में शामिल करें।

यदि यीशु की आत्म-पहचान वह है जो आत्म-समर्पण करता है, तो वह परमेश्वर की पहचान भी है, और यह चर्च की पहचान के लिए दिशा निर्धारित करता है, जो आत्म-समर्पण करने वाले लोग हैं और आत्म-समर्पण करने वाले प्रेम का जीवन जीते हैं, आत्म-समर्पण करने वाले प्रेम की सामुदायिक गतिशीलता। पद 5 में, पौलुस पिता परमेश्वर के संबंध में इस तरह की प्रार्थना इच्छा का उल्लेख करता है, जिसकी महिमा युगानुयुग होती रहे। महिमा का यह गूढ़, बहुत संक्षिप्त उल्लेख केवल सामान्यीकृत नहीं है, बल्कि पौलुस के धर्मशास्त्र में, परमेश्वर की महिमा का मानवता से सब कुछ लेना-देना है क्योंकि पौलुस के धर्मशास्त्र में लोग परमेश्वर की छवि हैं, वे परमेश्वर की महिमा हैं, और उन्हें परमेश्वर की महिमा करनी है, जो मुझे आइरेनियस के उद्धरण की याद दिलाता है, परमेश्वर की महिमा पूरी तरह से जीवित मनुष्य है।

परमेश्वर की महिमा पूरी तरह से जीवित मनुष्य में है। और बाइबल धर्मशास्त्र में, मनुष्य, परमेश्वर की शांति और परमेश्वर के शासन, पृथ्वी पर परमेश्वर के शालोम के प्रसार की देखरेख करते हैं, यही परमेश्वर की महिमा है। इसलिए, मनुष्य उस तरह से परमेश्वर की महिमा करते हैं।

इस प्रकाश में देखा जाए तो, आप गलातिया में विवाद को इस तरह से चित्रित कर सकते हैं कि परमेश्वर की महिमा किस तरह की है। यहूदी मिशनरियों को पूरा यकीन है कि धरती पर परमेश्वर की महिमा गैर-यहूदी देशों, गैर-यहूदी समुदायों में यहूदी पहचान के प्रसार से होती है। गैर-यहूदियों का यहूदी धर्म में धर्मांतरण, यहूदी परंपरा का ईमानदारी से पालन करना, खतना करवाना और मूल रूप से यहूदी धर्म में धर्मांतरण, यहूदी बनना, इस तरह से मसीह में परमेश्वर की उचित महिमा होती है।

पॉल देखता है कि मूल रूप से मसीह में परमेश्वर की महिमा करना गैर-यहूदी बने रहना है, लेकिन एक अर्थ में, बुतपरस्त बने रहना है क्योंकि यहूदी ईसाई पॉल के समुदायों को बुतपरस्ती

के समुदायों के रूप में देखते थे। इस्राएल के परमेश्वर की महिमा करने वाला व्यक्ति यहूदी होना है। लेकिन पॉल देखता है, और पतरस भी देखता है, लेकिन पॉल ईसाई सुसमाचार की पूर्ण संगति को यहूदी ईसाइयों द्वारा यहूदी ईसाइयों के रूप में परमेश्वर की महिमा करने और गैर-यहूदी ईसाइयों द्वारा गैर-यहूदी ईसाइयों के रूप में परमेश्वर की महिमा करने के रूप में देखता है।

तुर्की के यीशु अनुयायी, मिस्र के यीशु अनुयायी, सीरियाई लोग, जो भी हो, जहाँ भी सुसमाचार पहुँचता है। तो, एक तरह से, यह इस बात पर विवाद है कि किस तरह का मानवीय व्यवहार वास्तव में परमेश्वर की महिमा करता है। पद 6 से 10 तक पहुँचते हुए, पौलुस अपनी फटकार शुरू किए बिना पद 6 से आगे नहीं बढ़ता है।

और इसलिए, वास्तव में, पद 6 से 10 तक पौलुस की फटकार है, बिना किसी तैयारी के। पद 6 में, यह तत्काल परिवर्तन और यह अत्यधिक भावनात्मक भाषा जहाँ वह कहता है, वह तुरंत उन पर दलबदल का आरोप लगाता है। यह दलबदल उस डिलीवरी के विपरीत है जिसके बारे में पौलुस ने अभी बात की थी।

परमेश्वर ही वह है जिसने गलातियों को वर्तमान बुरे युग से छुड़ाया है और उन्हें इस नए युग में लाया है, और वह उन्हें वापस भागते हुए चित्रित करता है। यह वैसा ही है जैसे परमेश्वर इस्राएल को मिस्र से निकालकर वादा किए गए देश में ले आया, और वे वापस लौटना चाहते हैं। जिसे, आप जानते हैं, निर्गमन में पढ़ें।

और ये कहानियाँ संभवतः वही हैं जिनके बारे में पॉल सोच रहा है। आप दलबदल कर रहे हैं। आप गुलामी में वापस जा रहे हैं।

आप मिस्र वापस जा रहे हैं। वह कहते हैं कि वे एक अलग सुसमाचार के पक्ष में ऐसा कर रहे हैं, जिसके बारे में वह आगे कहते हैं कि वास्तव में यह दूसरा सुसमाचार नहीं है। केवल एक ही सुसमाचार है, जो इस बात का संकेत है कि जो लोग यहाँ गैलाटियन समुदायों में आए हैं और उन्हें हिला रहे हैं और उन्हें परेशान कर रहे हैं, उन्हें उत्तेजित कर रहे हैं, वे संभवतः यहूदी ईसाई हैं।

तो, वे गैर-ईसाई यहूदी नहीं हैं। मुझे यकीन नहीं है कि गैर-ईसाई यहूदियों को पॉल के समुदायों के लिए बहुत ज़्यादा चिंता रही होगी। ये यहूदी ईसाई हैं जो पॉल के समुदायों को बता रहे हैं कि वे पूरी तरह से परमेश्वर के राज्य में नहीं हैं।

वे तब तक बचाए नहीं जा सकते जब तक कि वे यहूदी धर्म में परिवर्तित नहीं हो जाते। पॉल यहाँ शब्दों को बिल्कुल भी नहीं तोड़ता, लेकिन वह श्लोक 8 और 9 में कहता है, वह यह दोहरा दंड जारी करता है, जिसे मैं अभी पढ़ सकता हूँ, लेकिन भले ही हम, पॉल और उसकी प्रेरितिक सेवकाई टीम, या स्वर्ग से कोई स्वर्गदूत, अगर हम आपको उस सुसमाचार के विपरीत प्रचार करें जो हमने उस पहली यात्रा में आपको प्रचार किया था, तो उस व्यक्ति को शापित होने दें। उन्हें शापित होने दें।

चर्च में इस्तेमाल की जाने वाली यह भाषा गंदी और अशिष्ट है। मुझे इसकी परवाह नहीं है। मैं इसे फिर से कहने जा रहा हूँ।

यह पॉल की बयानबाजी है। वह जानता है कि यह उन्हें थोड़ा हिलाकर रख देगा। जैसा कि हमने पहले कहा है, मैं फिर से कहता हूँ, अगर कोई व्यक्ति आपको उस सुसमाचार के विपरीत प्रचार करता है जिसे आपने प्राप्त किया है, तो उसे शापित होने दें।

इससे यह सवाल उठता है कि क्या वास्तव में अन्य ईसाई लोगों के लिए इस तरह की भाषा का उपयोग करना उचित है? जब भी मैं कक्षा में गलातियों को पढ़ाता हूँ, तो मैं हमेशा अपने छात्रों से पूछता हूँ, क्या आपको लगता है कि इस तरह से बात करना उचित है? कभी-कभी, ईसाई वास्तव में एक-दूसरे से इस तरह से बात करते हैं। मैं कुछ ईसाई संदर्भों में रहा हूँ जहाँ ईसाइयों के एक समूह के पास धर्मशास्त्रीय स्पेक्ट्रम पर उनके बहुत करीबी किसी व्यक्ति के साथ बहुत सारे धार्मिक समझौते हो सकते हैं, लेकिन वे इस एक संकीर्ण बात पर असहमत हैं। और बाइबिल की बेवफाई और पवित्रशास्त्र के साथ खिलवाड़ करने के आरोपों का स्तर अविश्वसनीय है।

क्या इस तरह से बात करना ठीक है? मैं इसका उत्तर देने वाला नहीं हूँ। मैं इस तरह से बात करने में बहुत, बहुत हिचकिचाऊँगा। पौलुस एक प्रेरितिक भाषण दे रहा है, परमेश्वर के स्थान पर परमेश्वर का वचन बोल रहा है।

वह प्रभु मसीह की ओर से यीशु मसीह के प्रेषित के रूप में बोल रहे हैं। मुझे यकीन नहीं है कि हमें इस तरह का विशेषाधिकार अपने लिए लेना चाहिए। मुझे लगता है कि सोचने के कुछ तरीके हैं, ईसाई समुदाय होने के कुछ तरीके हैं, जो निंदनीय हैं।

निश्चित रूप से, हम उन सभी तरीकों के बारे में सोच सकते हैं जिनसे चर्च आर्थिक उत्पीड़न या शोषण में भाग लेता है, जिस तरह से चर्च उन संस्कृतियों को बढ़ावा देता है और उनमें भाग लेता है जो नस्लवादी हैं, जहाँ लोगों पर अत्याचार किया जाता है और मानवता का अपमान किया जाता है। लेकिन मुझे लगता है कि हमें एक-दूसरे से इस तरह की उच्च-शक्ति वाली भाषा का उपयोग करते हुए बात करने में बहुत सावधान रहने की आवश्यकता है। मैं झिझकूँगा, विशेष रूप से सुसमाचारों में यीशु की चेतावनियों के प्रकाश में, कि हम जो कहते हैं, हमारे शब्दों के आधार पर हमें न्याय का सामना करना पड़ेगा।

सावधानी से आगे बढ़ें। खैर, पौलुस यहाँ पद 10 में आगे बढ़कर इस बात से इनकार करता है कि वह मनुष्यों को खुश करने की कोशिश कर रहा है। क्या आपने सुना कि मैंने अभी क्या कहा कि पौलुस इन समुदायों से क्या कह रहा है? क्या आपको लगता है कि मैं अब मनुष्यों या परमेश्वर का अनुग्रह चाह रहा हूँ? क्या मैं मनुष्यों को खुश करने का प्रयास कर रहा हूँ? अगर मैं अभी भी मनुष्यों को खुश करने की कोशिश कर रहा होता, तो मैं मसीह का दास नहीं होता।

तो, मनुष्य को खुश करने से इनकार करना इस बात का संकेत है कि पॉल कोई लोकप्रियता प्रतियोगिता जीतने की कोशिश नहीं कर रहा है। वह अब जीवित नहीं है, मेरा मतलब है पॉल की अपनी आत्म-धारणा में, वह इस दुनिया के लिए पूरी तरह से मर चुका है। वह ऐसी पहचान बनाने की कोशिश नहीं कर रहा है जिससे दूसरे लोगों की वाहवाही मिले।

वह ऐसी पहचान बनाने की कोशिश नहीं कर रहा है जिससे उसे सामाजिक स्वीकृति मिल सके। वह गलातियों के अंत में कहता है, यीशु मसीह के माध्यम से, मैं दुनिया के लिए क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ, और दुनिया मेरे लिए क्रूस पर चढ़ा दी गई है। इसका मतलब यह नहीं है कि वह भौतिक दुनिया से बाहर आता है।

उनके विचार में, इसका मतलब है कि वह इन शब्दों में बिल्कुल नहीं सोच रहे हैं। इसलिए, वह किसी को खुश करने की कोशिश नहीं कर रहे हैं। वह यहीं पर हैं।

उसे प्रभु मसीह से यह काम मिला है। वह मसीह में अपनी पहचान को लेकर सुरक्षित है। वह जानता है कि वह कौन है।

वह सामाजिक स्वीकृति पाने के लिए पहचान बनाने की कोशिश में मर चुका है। वह इस नए क्षेत्र में है जहाँ वह प्रभु मसीह के प्रति वफ़ादारी पर केंद्रित है, जो उसे यह कहने की स्वतंत्रता और आज़ादी देता है कि वह जानता है कि उसके श्रोताओं को क्या सुनने की ज़रूरत है। इसलिए, पॉल के दिमाग में, वर्तमान बुरे युग में, वह दूसरों की प्रशंसा के लिए जी रहा होगा।

नई मानवता में, वह परमेश्वर की महिमा के लिए जी रहा है।

खैर, यहीं पर रुक जाओ। यह गलातियों 1 की आयत 1-10 है। इस परिचय में, पौलुस बहुत अचानक से शुरू करता है, बस अपने श्रोताओं का सामना करने के लिए मुड़ता है, और हम अपने अगले व्याख्यान में उसके तर्क के सार पर आगे बढ़ेंगे।